Sunday Avyakt Murli Revision Class

(दिल के ज्ञानी तथा स्नेही बनो और लीकेज को बन्द करो)

AM 23-05-2021 (Rev. : 06.01.88)

By BK Dr Sachin Bhai Ji

Class Date : 23-05-2021

Venue- Meditation Hall, Pandav Bhavan

ओम शान्ति। ईसा के लगभग 700 वर्ष पूर्व बल्ख में एक राजा था इब्राहिम, बल्ख जो अफगानिस्तान में है। जैसे भारत में सिद्धार्थ, गौतम हैं, जिसने राजपाठ का त्याग कर सन्यास ले लिया था, उसी तरह सूफी परंपराओं में बादशाह इब्राहिम हैं और इब्राहिम के जीवन में कैसे वैराग्य आया उसकी सूफियों ने ढेर सारी कहानियां कही हैं। उसमें से एक कहानी- वो समाज था दास प्रथा का, राजाओं के पास दास होते थे और कहा जाता है इब्राहिम का जो खास गुलाम था वो किसी कारण कहीं चला गया, तो किसी दूसरे गुलाम की नियुक्ति करनी थी। इब्राहिम बहुत बड़ा सम्राट था, साहित्य में लिखा है उसकी 16 हजार रानियां थी, 180 करोड़ घोड़े उसके पास थे।

कुछ चोर किसी जंगल से गुजर रहे थे, उन्होंने देखा एक व्यक्ति है, बड़ा ही तगड़ा सुंदर काया और वो सारे चोर मिलकर उस व्यक्ति को पकड़ लेते हैं, ये सोचकर कि इसको बाजार में बेच देंगे गुलाम की तरह। वो व्यक्ति वास्तव में एक सूफी फकीर था, वो चोर उसे पकड़ने आते हैं, वो कुछ नहीं कहता, पकड़ने देता है। उन चोरों को भी आश्चर्य लगता है, चाहे तो ये व्यक्ति हम सबको पछाड़ सकता है, इतना बलवान और शक्तिशाली दिखने में है। उसे पकड़ लेते, हाथ में बेडियां डाल देते और उसे ले जाने लगते हैं। वो व्यक्ति कहता है, बेडियों की क्या जरूरत है, मैं खुद ही चलने को तैयार हूं। उनको आश्चर्य लगता है चोरों को, ये कैसा व्यक्ति है! वो कहता है, मैं जीवन के सहज प्रभाव के साथ बहता हूं। उसे पकड़कर वो लोग बाजार में ले आते हैं बेचने के लिए, उसी बाजार से इब्राहिम गुजर रहा होता है, वो देखता है, ये गुलाम तो बहुत अच्छा है और उसको वो खरीद लेता है, अपने रथ पर बैठाता है और ले चलता है। बातचीत होती है, उस गुलाम से पूछता है, तुम्हें भोजन में क्या पसंद है? वो गुलाम कहता है, जो आप खिलायेंगे। इब्राहिम पूछता है, तुम्हें पहनने में क्या चाहिए? वो कहता है, जो आप पहनाओगे, मैंने सब मालिक की इच्छा पर छोड़

दिया है। इब्राहिम को आश्चर्य होता है, लगाव सा हो जाता है इस नये व्यक्ति से। महल पहुंचता है, इब्राहिम कहता है, तुम्हें किस तरह की व्यवस्था चाहिए बताओ, जैसी तुम्हें व्यवस्था चाहिए वैसी तुम्हें करके देंगे। वो कहता है, मुझे तो कुछ भी नहीं चाहिए, जिस तरह आप रखोगे, जहां आप रखोगे, वैसे ही मैं रहूंगा, मालिक की मर्जी ही मेरी मर्जी, मालिक की मर्जी पर से बहना ही मेरा जीवन है। जैसे ही इब्राहिम इस बात को सुनता हैं, जैसे चेतना के कपाट खुल जाते हैं। सोचने लगता है, इतने सालों से मैं ढूंढ ही रहा था ऐसे व्यक्ति को या फिर ऐसे किसी गुरू को, जो मुझे उस परमात्मा का मार्ग बता दे। अब तक जिन-जिन के पास गया सभी अहंकारी थे, ज्ञान कहीं से नहीं मिला, सच्चा वास्तविक गुरू तो ये है और इब्राहिम उस गुरू के चरणों में गिर पड़ता है, उस गुलाम के चरणों में, कैसा ये समर्पण है तुम्हारा, कैसा ये प्रेम है तुम्हारा उस परमात्मा से। सहज जीवन, सहज बहे, अपनी मर्जी सहज बहे उसकी मर्जी के साथ, जीवन सहज सतत प्रवाह हो और कहा जाता है इब्राहिम के जीवन में ऐसे तो ढेर प्रसंग है, सूफियों ने बहुत सी कहानियां लिखी हैं। ऐसा वैराग्य आता है, सब कुछ छोड़ देता है, कहां उसकी 16 हजार रानियां थी। अर्थात् व्यक्तियों में सुख नहीं है, अगर होता तो क्यूं ये राजे महाराजे व्यक्तियों को छोड़कर, राजप्रसाद को छोड़कर, वैभवों को छोड़कर, सुख की तलाश में निकलते? सुख व्यक्तियों में नहीं है, वैभवों में नहीं है, शरीरों में नहीं है।

कितनी सोचने की बात है, जरूर बड़ा गहरा कारण होगा कि जिनके पास सबकुछ था वो सबकुछ छोड़कर निकल पड़े अर्थात् वो जो सबकुछ है वो सबकुछ नहीं है। जो उसकी मर्जी, जहां वो बिठाये, जहां वो रखे, जो वो खिलाये, जो वो पहनाये, राजी तेरी रजा में। यही तो समर्पण है, समर्पण अर्थात् सम्पूर्ण चक्र, सर्कल, यदि कोई सर्कल है उसमें जरा सा भी टूटा हुआ रहे तो क्या उसे सर्कल कहेंगे? समर्पण अर्थात् सम्पूर्ण, **समर्पण अर्थात 100 प्रतिशत सरेंडर, यदि एक परसेंट भी कमी तो वो सरेंडर नहीं क्योंकि सर्कल पूर्ण नहीं हो रहा है**। क्या ऐसा प्रभु प्रेम हमारे जीवन में है? क्या ऐसा परमात्म प्रेम हमारे जीवन में है कि उस प्रेम के आगे इस संसार का हर सुख, हर वस्तु, हर वैभव, हर संबंध, हर प्राप्ति गौण लगे, व्यर्थ लगे?

तो आज की मुरली में क्या कहा बाबा ने? किस विषय की चर्चा है? ज्ञान की चर्चा है या प्रेम की चर्चा है? ज्ञान की नहीं है, प्रेममयी ज्ञान की, प्रेमयुक्त ज्ञान की क्योंकि ज्ञान बीज है तो पानी क्या है? स्नेह, और फल क्या है? प्राप्ति। ज्ञान के बीज को स्नेह से सींचना है तो प्राप्ति होगी। कैसा ये रूहानी प्रेम, परमात्म प्रेम कैसा है, क्या विशेषता है इस प्रेम की? निःस्वार्थ है, और कैसा है ये प्रेम? रूहानी है, अंग्रेजी

में शब्द है प्लेटोनिक लव (platonic love), लव अर्थात् नॉन फिजिकल (non-physical), अपार्थिव। पार्थिव नहीं, शारीरिक नहीं, दैहिक नहीं। नॉन फिजिकल, शरीर का कोई पार्टिकल इस प्रेम को स्पर्श नहीं करता, ऐसा प्रेम। तो कैसा है ये प्रेम? और? अविनाशी है, कैसा है ये प्रेम? आत्मिक, कैसा है ये प्रेम? सच्चा, कैसा है ये प्रेम? क्या करता है ये प्रेम? **तो आज की मुरली में आठ बातें है इस प्रेम के विषय में** :-

1. <u>आत्मिक प्रेम, परमात्म प्रेम –</u> ये प्रेम आत्मिक प्रेम है, ये प्रेम परमात्म प्रेम है, ये प्रेम रुहानी प्रेम है, ये प्रेम अविनाशी प्रेम है, ये प्रेम सच्चा प्रेम है। इस प्रेम की तुलना यदि संसार के प्रेम से किया जाए तो संसार के सभी प्रेम झूठे है। वी लिव इन द वर्ल्ड ऑफ इल्यूशन *(We Live In The World Of Illusion)*, लेखक कहता है, हम एक भ्रम के जगत में जीते हैं, जिसे हम सत्य सोचते हैं वो असत्य है, जो वास्तविकता है उसका रिवर्स हम सोचते हैं, वो है ही नहीं सत्य। वी लिव इन द वर्ल्ड ऑफ डिसेप्सन *(We Live In The World Of Deception)*, हम एक भ्रम में, एक धोखे में जीते हैं क्योंकि जो-जो हम सोचते हैं वास्तविकता उससे कई भिन्न है या फिर विपरीत है। हम सोचते हैं, सब मुझसे कितना प्यार करते हैं, द रीयल्टी इज रिवर्स (The Reality Is Reverse)। **जब तक इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जाता है कि मैं भ्रम में हूं, सत्य की यात्रा शुरु ही नहीं होती है**। जिसे हम सत्य समझ रहे हैं वो असत्य है।

तो सबसे पहली बात, आठ बाते हैं इस प्रेम के विषय में, ये जो परमात्म प्रेम है, कैसा है? नि:स्वार्थ, संसार के सभी संबंधों में स्वार्थ समाया हुआ है। ये प्रेम सच्चा है, नि:स्वार्थ है, अविनाशी है, इसका कोई आदि-अंत नहीं है, संसार के सभी संबंधों का आदि है और अंत है, **A** है और **Z** है, शुरु होते हैं और खत्म होते हैं। हम सभी ट्रेन में बैठे हुए हैं, ट्रेन चालू हो गई हमारे जन्म के साथ, एक समय आया, मां का स्टेशन आ गया वो उतर गये, फिर बाप का स्टेशन आया वो उतर गये, हम सोचते और कभी-कभी दोनों एक साथ उतर गये फिर तो बडी पीड़ा होती है और ऐसे समय में, पिछले एक साल में ये (covid-19) बहुत ज्यादा हुआ है, एक साथ ही ट्रेन से उतर गये और फिर कोई दूसरा आ गया, वो ट्रेन में बैठा और उससे बहुत अच्छी दोस्ती हो गई और बहुत अच्छा लगने लगा उसका स्वभाव और फिर एक दिन वो भी उतर गया। फिर दूसरा चढ़ा, फिर वो उतरा, फिर दूसरा चढ़ा, फिर वो उतरा और एक दिन हम ही उतर गये, पर ट्रेन तो चालू है, पर चढ़ना-उतरना तो लगा ही है। **न किसी के आने का सुख, न किसी के जाने का दु:ख, न मान की कामना, न अपमान का भय, इसे वैराग्य कहा जाता है।** भक्ति मार्ग में दिखाया है

शंकर तपस्या में खोया है तीन जगह पर, कभी तो पहाड़ों पर है, सदियां बीत जाती हैं उसे पता नहीं चलता है, तो कभी घने वनों में हैं, तो कभी कहां पर है? श्मशान में है, ये तीन जगह उसे बड़ी पसंद है, श्मशान जो वैराग्य दिलाती है, शरीर में भस्म रमा है। वो जंगल जहां प्रकृति की आवाजों के अतिरिक्त और कोई आवाज नहीं और वो हिम आच्छादित पर्वत जहां प्रशांत वायुमण्डल है। चढ़ना-उतरना चालू ही है, संसार का कोई संबंध अविनाशी नहीं है। सबसे पहली बात- ये प्रभु प्रेम है, ये परमात्म प्रेम है, ये परमात्म मोहब्बत, प्रीत, स्नेह नि:स्वार्थ है, सच्चा है, अविनाशी है, आत्मिक है। दैहिक नहीं है, **जिस प्रेम में बीच में शरीर आ जाता है, वहां डिस्टरबेंस चालू हो जाते हैं। जिस प्रेम में अंत तक शरीर आता ही नहीं बीच में, वो लंबा समय चलता है, शरीर आते ही हलचल शुरु। वैराग्य की एक और परिभाषा है- इस शरीर के एक कण से भी मोह नहीं, इस देह के किसी एक पार्टिकल से भी, एक सेल से भी, एक कोशिका से भी मोह नहीं।** ये वैराग्य की परिभाषा है, ऐसा अनित्य बोध, शरीर के प्रति ऐसा तटस्थ भाव, ऐसी सजगता।

2. <u>सारे कल्प के लिए स्नेही बना देता है-</u> दूसरी बात, ये प्रभु प्रेम क्या करता है? सारे कल्प के लिए स्नेही बना देता है क्योंकि ये स्नेह ब्राह्मण जीवन की नींव है, फाउण्डेशन है, एक जन्म के लिए स्नेही नहीं बनाता है, सारे कल्प के लिए स्नेही, लवली बना देता है। लास्ट तक स्वभाव में स्नेही स्वरूप रहेगा, पांच हजार साल तक स्नेह समाया रहेगा अगर वो प्रेम इस समय उत्पन्न हो जाये हृदय में। ये दूसरी बात स्नेह की।

3. <u>सच्चा आनंद का आधार है -</u> ये स्नेह क्या करता है? सच्चा आनंद का आधार है। संसार में आनंद तो है ही नहीं। ये एक मात्र ऐसा प्रेम है, डिवाइन लव, जिससे क्या होगा? सच्चा आनंद उत्पन्न होगा हृदय में। नहीं तो आनंद की झलक कहां? जहां देखो वहां दु:ख ही दु:ख है, पीड़ा ही पीड़ा है, दर्द ही दर्द है, संसार डूबा है दर्द में, आनंद की अनूभूति कहां है? यहां एक प्रभु प्रेम ही है जिसमें आत्मा जैसे ही डूब जाती हैं आनंद की लहरें लहराने लगती है, न सुख, न दु:ख दोनों से परे, आनंद, ये तीसरी बात।

4. <u>परमात्म स्नेह चुंबक है -</u> ये प्रभु प्रेम, ये परमात्म स्नेह क्या है? चुंबक, क्या करता है ये चुंबक? ये मैग्नेट है स्प्रीच्युअल, क्या करता है? ट्रांसफोरमेशन (Transformation), परिवर्तन कर देता है आत्माओं को, जो अशुद्ध आत्मायें है जो अपवित्र आत्मायें हैं उनके हृदय में भी प्रभु प्रेम उत्पन्न कर देता है।

पर क्या इतना प्रभु प्रेम हमारे ह्रदय में है? जैसा वो चलाये, जहां वो रखे, जो वो खिलाये। क्या करें जो प्रभु प्रेम सभी हदों को पार कर जाये?

5. अधिकार और नशे का आधार है – ये प्रभु प्रेम किस चीज का आधार है? अधिकार और नशे का आधार है। जिस ह्रदय में प्रभु प्रेम होगा, परमात्म स्नेह होगा वो कैसा होगा? अधिकारी होगा क्योंकि इस अधिकार से बड़ा इस संसार में और कोई अधिकार नहीं, परमात्मा खुद ही अधिकार दे रहा है। एक छोटा सा बच्चा अपनी मां के साथ किसी दुकान में जाता है, बच्चा दिखने में बहुत ही क्यूट सलोना है, चब्बी-चब्बी (chubby chubby), उस दुकानदार को बड़ा पसंद आता है और चॉकलेट का एक डिब्बा उसके सामने रखता हैं और बच्चे से कहता है कि जितना तुमको चाहिए ले लो, बच्चा इन्कार कर देता है, दुकानदार कहता है क्यों? वो कहता है, आप दो तो मैं लूंगा नहीं तो नहीं लूंगा। बच्चे की विनम्रता देखकर दुकानदार तो और ही खुश हो जाता है और चॉकलेट निकालकर उसे दे देता है। मां और बेटा घर आते हैं, मां इतनी खुश होती है मेरा बेटा कितना सयाना, कितना होशियार, परिचय दिया विनम्रता का, पूछती है कि तुमने ऐसा क्यों किया? वो कहता है कि जब मैंने चॉकलेट देखे तो मुझे लगा कि अभी जाकर ले लूं, पर बाद में सोचा मेरा हाथ कितना छोटा है, केवल दो या तीन आयेंगे और अंकल के जो हाथ है वो कैसे हैं? बड़े, इसीलिए मैंने उनसे कहा कि आप दे दो और मैंने हाथ ऐसे कर लिए तो कितने सारे चॉकलेट आ गये। परमात्म अंकल आया है, उसे देने दो, भर देगा झोली, तुम केवल फैलाकर रख दो, **पात्र बन जाओ, खजाना अपने आप गिरने लगेगा**। परमात्म स्नेह क्या कर देता है? अधिकारी बना देता है। क्या कर देता है? रूहानी नशे मे ला देता है, रूहानी नशे का आधार है।

6. ब्राह्मण जीवन को रमणीक बना देता है – ये परमात्म प्रेम ब्राह्मण जीवन को क्या कर देता है? रमणीक, रूखा-सूखा नहीं, बंजर भूमि नहीं है, ये जीवन रमणीक जीवन है, हंसते-नांचते-गाते फरिश्ते, अवतार हो तुम, बुद्ध नहीं, मीरा। डांसिंग मसीहा, पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे, ज्ञान मीरायें।

7. परमात्म प्रेम ने दिल के सारे टुकड़ों को जोड़ दिया – संसार ने क्या कर दिया इस दिल का? कितने टुकड़े किये बात मत पूछो। हर दिन टुकड़े होते रहे, बचपन से जिसमें दिल लगाया उसने एक दिन तलवार चला दी। जिस-जिस से दिल लगाया, जिस-जिस से प्यार किया, ऐसा कोई है जिससे प्यार किया और उसने धोखा न दिया? अगर कोई ऐसा है तो तैयार हो जाओ, भविष्य में वो भी हो जायेगा। टुकड़े-टुकड़े कर दिये और प्रभु प्रेम ने क्या कर दिये, सारे टुकड़ों को जोड दिये। दिल के टुकड़े हजार, कोई यहां गिरा कोई वहां, इतने टुकड़े थे, कहां कहां गिरे थे पता ही नहीं, भगवान ने सारे टुकड़ों को जोड़ा। एक पिता न्यूज पेपर पढ़ रहे हैं, वो बच्चा बार-बार आता है, कुछ-कुछ करता है इधर से कुछ करता उधर से कुछ करता है, बहुत डिस्टर्ब करता है। पिताजी को लगता है क्या करें, इसको कैसे बिजी करूं? एक चित्र लेते हैं, उसमें बहुत सारी ड्राइंग बनी हुई होती है, उसके टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं और उसको कहते हैं कि तुम इसको जोड़ों। अब पिता जी को लगता है कि अब एक घण्टा करता रहेगा ये, वो पांच मिनट में आ जाता है और जोड़ देता है। उसको पूछते, तुमनें किया कैसे? वो कहता है, आसान है, आपने ये जो चित्र दिया ना इसके पीछे भारत का चित्र था, बस मैंने उतना जोड़ दिया । दिल के टुकड़े यहां वहां जो गिरे थे ना, उस चित्र के पीछे एक तुम्हारे सम्पूर्ण स्वरूप का चित्र था, बस वो बाप ने जोड़ दिया और इतने सारे टुकड़े जो थे वो जुड़ गये, नहीं तो टुकड़े कहां गिरे वो ढूंढना ही कितना मुश्किल हैं कोई यहां कोई वहां, कोई विदेश में गिरा कोई कहां गिरा।

8. परमात्म स्नेह सहज और मेहनत से मुक्त कर देता है – ये स्नेह क्या कर देता हैं? सहज कर देता हैं, ये स्नेह क्या कर देता है? मेहनत से मुक्त कर देता है। नहीं तो ये ज्ञान कैसा है? केवल दिमागी ज्ञान न हो, दिमागी ज्ञान केवल दिमाग तक गया हुआ है तो क्या होगा? मेहनत, क्या होगा? क्या, क्यूं, कैसे, ऐसा क्यूं, वैसा क्यूं ढेर सारे प्रश्न? परन्तु जहां प्रेम है, जहां स्नेह है वहां समर्पण है। वो परवाना है, वो पूछता नहीं है, ये क्या? ये क्यूं? ये कैसे? स्नेह की बहुत अच्छी परिभाषा इस मुरली में बाबा ने दी है। स्नेह अर्थात् अनुभूति के सागर में समा जाना, स्नेह अर्थात् प्राप्तियों के सागर में समा जाना।

इस मुरली में दो ऐसे महावाक्य है इतने शक्तिशाली, दूसरा है वो तो बहुत ही पॉवरफुल है जिसको हम लोग सब रिपीट करेंगे एक साथ बाद में। पर पहला वाक्य है **स्नेह की परिभाषा, स्नेह अर्थात् सागर में डूब जाना, कौन से सागर में? प्राप्तियों के सागर में डूब जाना, अनुभूतियों के सागर में डूब जाना।**

स्नेह एक विशेष अनुभूति है, बाबा ने कहा ये साधारण अनुभूति नहीं है स्नेह, भगवान के लिए स्नेह उत्पन्न हो जाना बहुत बड़ा भाग्य है, बहुत बड़ा भाग्य। पता नहीं किस किस जन्म में क्या-क्या पुण्य किये होंगे, कितनी पूजायें, प्रार्थनायें, तपस्यायें की होंगी तब कहीं जाकर ये परमात्म प्रेम इस ह्रदय में उत्पन्न हुआ है। रेयरेस्ट ऑफ द रेयर एक्टिवटी (Rarest Of The Rare Activity), एक्ट है ये इस संसार की जो सहज, प्राकृतिक, नैसर्गिक, कुदरती, नैचुरल प्रेम है प्रभु के लिए। जो आनंद उसकी कुटियां में बैठकर मिलता है वो संसार में कहीं बैठकर नहीं मिलता है, जो आनंद, शांति स्तंभ में मिलता है वो और कहां मिलेगा, जो आनंद हिस्ट्री हॉल में है, जो आनंद बाबा के कमरे में है, ये चारों ही स्थान पॉवरफुल इलेक्ट्रिक फील्ड है, मैग्नेटिक फील्ड है वहां पर। सोचो एक ऐसे इलेक्ट्रिक फील्ड में प्रवेश कर रहे हैं चारों धामों में प्रवेश करते समय कि वहां अब मुझे कुछ नहीं करना है, बस समर्पित कर देना है, जो काम करना है वो करेगा, वो इलेक्ट्रिक एनर्जी प्रवेश करेगी चेतना में, पूरी बॉडी, पूरा शरीर, पूरा मन, पूरी वृत्तियां रिवाइटलाइज, चेंज होंगी।

एक ऐलीमेंट दूसरे ऐलीमेंट में क्या अंतर है? एटॉमिक नंबर चेंज कर दो, अभी जो ये स्टील का एटॉमिक नंबर चेंज कर दो वो गोल्ड बन जायेगा, बस इतना ही तो फर्क है दो धातुओं में और क्या फर्क है? तांबे में क्या फर्क है, लोहे में क्या फर्क है और सोने में क्या? एटॉमिक नंबर चेंज हो रहे हैं। वैसे ही ये चार धाम इलेक्ट्रिक फील्ड हैं, मैग्नैटिक फील्ड हैं, वहां जाते ही सारे एटॉमिक नंबर इधर-उधर होने लगेंगे, सारी काया इधर-उधर होने लगेगी। बस उस भाव से प्रवेश करना है कि मैं कहां प्रवेश कर रहा हूं? एक इलेक्ट्रिक फील्ड में और समर्पित कर दो। देखो क्या होता है? शॉक लगना चाहिए, झटके, झुटके नहीं, सहज प्रभु प्रेम उत्पन्न हो जाये ह्रदय में। तपस्या, योग भट्ठी की परिभाषा है तपस्या, तपस्या की परिभाषा है संस्कार परिवर्तन, संस्कार परिवर्तन अर्थात् संस्कृति परिवर्तन, आंतरिक संस्कृति ही परिवर्तन हो जाये। आत्मा के एटॉमिक नंबर इधर-उधर हो जाये, चेंज हो जाये, यहीं पर अनुभव हो उस ऐंजिलिक बॉडी का, यहीं पर, सतयुग में नहीं, यहीं पर उस देवताई शरीर का अनुभव हो, कंचन काया का यहीं पर अनुभव हो, यहीं उड़ने का अनुभव हो जाये, यहीं लगे कि चल नहीं रहा हूं, उड़ रहा हूं।

जितना शरीर में प्राण शक्ति होगी उतना उड़ने का अनुभव होगा। चार्ज कर दो स्वयं को। दो विधियां हैं प्रभु प्रेम को बढ़ाने की, वैसे तो ढेर हैं पर आज हम दो देखेंगे। पहला भोजन, सारी भोजन की प्रक्रिया को

राजयोग का प्रयोग बना देना है। **भोजन याद में बनाया जाये, मौन में बनाया जाये, मौन में खाया जाये तो वो भोजन खाने की क्रिया प्रार्थना हो जायेगी, यज्ञ हो जायेगी, तपस्या हो जायेगी, योग में गिना जायेगा। अपनी दृष्टि से उस थाली को चार्ज कर दो**, एक-एक निवाला, एक-एक कण प्यूरिटी की किरणों से भर दो और अहो भाव से, कृतज्ञता के भाव से, धन्यवाद के भाव से, कौन खिला रहा है? उसे खिलाने दो, हमारे हाथ बहुत छोटे हैं, उसके हाथ बड़े हैं, आ.. करो, बस वो खिलायेगा। ये भाव कि मेरी पालना यज्ञ से हो रही है, किसी देहधारी से पालना नहीं हो रही है, किसी मनुष्य के पैसों से पालना नहीं हो रही है। जो गृहस्थ में रहते हैं, जो मधुबन निवासी नहीं है, वो भी यहीं समझे कि हमारी पालना यज्ञ से हो रही है और उससे भी बड़ा संकल्प है कि मैं स्वयं ही यज्ञ हूं। महायज्ञ से पालना हो रही है, भगवान खिला रहा है, जल्दी-जल्दी नहीं खाना है, धीरे-धीरे। **अभी-अभी खाता हूं और फिर योग करने जाता हूं, योग करने जाता हूं नहीं, यही योग है। वो चलना भी राजयोग हो जाये, उठना भी राजयोग हो जाये, खड़ा होना भी राजयोग हो जाये, खाना भी राजयोग हो जाये, पीना भी राजयोग हो जाये, सोना भी राजयोग हो जाये, जीवन राजयोग की प्रयोगशाला बन जाये।** नहाना भी राजयोग, मैं नहा रहा हूं, पानी का एक-एक कतरा एक-एक विकार को धो रहा है, शरीर स्वच्छ नहीं हो रहा है, मन स्वच्छ हो रहा है, जन्म-जन्म के विकार दग्ध हो रहे हैं, चेतना प्रज्जवलित हो रही है, ऊर्जा का आरोहण हो रहा है, कुण्डलीनी जाग रही है, ऊर्ध्वरेता योगी बन रहा है। ये भाव कि उठूं और भागू बाबा के कमरे में, नहीं, उठना ही योग है, नहाना ही योग है, चलना ही योग है, बोलना ही योग, हंसना ही योग। तुम हंसों तो क्या हो जाये, क्या लगे लोगों को, जब तुम हंसों तो क्या लगे? जैसे फूल झर रहे हैं, तुम्हारी हंसी में भी प्यूरिटी हो, तुम्हारे सोने में भी प्यूरिटी, तुम्हारे जागने में भी प्यूरिटी, ऐसा प्यूरिटी का बल। आज का वरदान है ना , संकल्प में भी प्यूरिटी।

ये प्रथा बंद करो, कौन सी प्रथा बंद करने को कहा बाबा ने? स्टॉप दिस कस्टम, दिस ट्रेडीशन ऑफ थ्री पीस *(Stop This Custom, This Tradition Of Three P's)* कौन से थ्री पी बताये? पहला पाप, फिर पश्चाताप, फिर माफी, पारडन (Pardon), पाप, पश्चाताप, माफी, छुट्टी हो गई? **छुट्टी नहीं होगी। एक-एक कर्म का हिसाब है, जो-जो तुमने ब्राह्मण बनने के बाद किया, लेखा जोखा है, दाग तो रहेगा। पाप, पश्चाताप, पारडन, बाबा ने कहा इस रीति को खत्म कर दो**। स्टॉप दिस कस्टम, स्टॉप दिस ट्रेडीशन (stop this tradition) । **ऐसी जागृत अवस्था में रहना है कि पाप ही असंभव हो**

जाये, प्रतिपल सजग, प्रतिक्षण सजग, अंदर ऐसी रुहानी क्रांति निरंतर हो कि मूर्छा हो ही न। ऊपर सारे कार्य चालू है, सर्कल, वर्तुल पर, अंदर सजगता है। ऊपर सेवायें चालू हैं, ऊपर बातचीत चालू है, ऊपर बोल रहे हैं, पर जैसे ही वो हो जाये एकदम जैसे मौन, केंद्र खींचे और वहां जैसे ही चेतना प्रवेश करे फिर किसी से कोई लेना देना नहीं, कुछ पता नहीं कौन क्या है? परन्तु पर कर्म क्षेत्र पर हैं तो कर्म ही सबकुछ है, सम्पूर्ण समर्पण से, कम्पलीट इन्वाल्वमेंट से, कम्पलीट तल्लीनता से किया जा रहा है, पर उसके बावजूद भी भीतर सजगता है, भीतर साक्षी भाव है, भीतर सम्पूर्ण डिटैचमेंट है, किसी से कोई लेना देना नहीं, परन्तु जब भी सर्कल पर आ रहे हैं कम्पलीट इन्वाल्वमेंट है। ये कैसा बैलेंस है? **एक तरफ सम्पूर्ण तल्लीनता, दूसरी तरफ सजगता और साक्षी भाव, एक तरफ अटैचमेंट दिखाई दे रही है, है नहीं, दिख रही है परन्तु अंदर भीतर डिटैच्ड है। क्या ये भाव हो सकता है? इसका लक्ष्य रखना है।** सेवा करना है तो सेवा ही सबकुछ है, सेवा जी जान से कर रहे हैं, परन्तु जैसे ही पूरी हुई, भीतर एक निष्कंप केंद्र है जो हिलता नहीं है, जो अडोल है, वहां पहुंच जाना।

तो प्रभु प्रेम अर्थात् परमात्म स्नेह अर्थात् सहज। बहुत भाग्य से ये प्रेम मिला है परन्तु ये प्रेम मिलने के बाद भी बच्चे बाबा से क्या कम्पलेंट करते हैं, क्या करते हैं कम्पलेंट? रचता का ज्ञान मिल गया, रचयिता का ज्ञान मिल गया, आत्मा है ये पता चल गया, परमात्मा का ज्ञान मिल गया, ब्राह्मण बन गये, सारी प्राप्तियां हो गई। और क्या-क्या हो गया? मधुबन में आ गये, यहां पर रहने लगे, यहां सेवा करने लगे, यहां समर्पणमयी जीवन है, सेवाकेन्द्र पर चले गये, इतने साल हो गये ज्ञान में, फिर भी, बट (but), फिर भी बट, फिर भी क्या? निरंतर याद नहीं है, याद में मेहनत है, सहज नहीं है, बाबा क्या करें? सेवायें बहुत कर ली, अमृतवेला बहुत उठ लिया, मुरलियां बहुत सुन ली, सुना ली, लिख ली, लिखवां ली, कितनी मुरलियां लिखी होंगी? उसका तो कोई हिसाब ही नहीं है, पता नहीं, अनगिनत डायरियां भर दी जबसे ज्ञान में आये तब से आज तक। क्या करें उनका समझ नहीं आता, कितनी डायरियां भर दी, फिर भी उत्तर क्या है भगवान का, उत्तर क्या है? क्यों हो रहा है हार्ट लीकेजिस, हार्ट ब्लोक्स तो सुना होगा, हार्ट लीकेजिस है। कई-कई लोग होते हैं, बचपन से ही हार्ट की जो वाल्व होती है लीक होती है। माइट्रल रिगर्जिटेशन, एओर्टिक रिगर्जिटेशन, ट्राइकस्पीड रिगर्जिटेशन *(Mitral Regurgitation, Aortic Regurgitation, Tricuspid Regurgitation)*, जो खून ऊपर से नीचे बहता है, नीचे के चेंबर में आने के बाद फिर ऊपर चला जाता है, प्योर-इम्प्योर मिक्स हो जाता है, गड़बड़ होती है पेशेन्ट को, चेस्ट

पेन होते रहता है, धड़कन बढ़ती है, सांस फूलता है। टूडी इको (2D echo) करो तो पता चलता है एक वाल्व लीक हो रही है, ट्रीटमेंट या तो रिपयेर करो या तो रिप्लेसमेंट, अगर कम लीक हो रही है तो रिपयेर से काम हो जायेगा, अगर बहुत ही खराब हो गई है तो रिप्लेसमेंट। बाबा ने कहा, प्रोब्लम क्या है तुम्हारा? हार्ट लीकेजिस, जिस ह्रदय में प्रभु प्रेम भरा है वहां से लीकेज (leakage), होल (hole), क्रेक (crack), क्रिवाइस (crevice), कारण? क्यूं लीकेज है हार्ट में, क्या कारण है? कारण क्या है लीकेज का? दो। लगाव, किसमें? व्यक्ति में, उस व्यक्ति के शरीर में, उस व्यक्ति की विशेषता में, उस व्यक्ति से हद की प्राप्ति में, ये पहला लगाव। दूसरा, वैभवों में लगाव, **ये पहला कारण**।

दूसरा कारण, घृणा, ईर्ष्या, किससे? व्यक्ति से, वो भी झुकाव की ही अवस्था है, जिससे बहुत नफरत है, जिसको हम क्रिटिसाइज करते हैं, अवसर देखते हैं कब ऐसा कुछ कहे कि जिससे वो आहत हो जाये और हमारा बदला पूरा हो जाये। ये भी तो उसी का चिंतन है, रावण को अंत में किसका चिंतन चलते रहता था दिन-रात? राम का। कंस दिन-रात क्या देखते रहता था? कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण। उसी तरह जिससे विरोध है, जिससे घृणा है, जिससे ईर्ष्या है, उसका भी चिंतन चालू रहता है। बाबा ने कहा, याद करेंगे बाप को, याद आयेगा वो। चलायेंगे स्वदर्शन, चलेगा परदर्शन। तो ये एक और दूसरा लगाव, लगाव है किसी से, अच्छा लगता है वो, **खतरनाक तो तब बन जाता है जब उसका शरीर अच्छा लगने लगता है, उसका रूप अच्छा लगने लगता है, उसकी विशेषता अच्छी लगने लगती है, उसी से हद की प्राप्तियां हो रही हैं।** जब तक वो वहां है, हम सेफ हैं, उसकी छत्रछाया में रह रहे जैसे। वो भी हमारे गांव का, हम भी उसी गांव के, उसी के साथ काम करना है तो थोड़ा सेफ्टी है, इंचार्ज। लगाव जहां पर है वहां पर परमात्म प्रेम नहीं है। भगवान बड़ा नटखट है, कोई दूसरा आ गया तो वो नहीं टिकता, नटखट तेरा लाल यशोदा, नटखट तेरा लाल। बहुत ज्यादा नटखट है, वो चला जाता है, भाग जाता है, वो कहता है मैं, बाइबिल में क्या लिखा है? आई गॉड दाय लॉर्ड एम ए जेलस गॉड, मैं बड़ा ईर्ष्यालू परमात्मा हूं। मेरे अतिरिक्त किसी को नहीं रखना अंदर, रखा तो मैं रूठ जाउंगा, मैं चला जाऊंगा। किसी से भी लगाव, किसी भी व्यक्ति से लगाव, बाबा ने कहा बच्चे बड़े होशियार है, क्या कहते हैं? लगाव नहीं है, अच्छा लगता है, उसके साथ सेवा करने में मजा आता है, अच्छा लगता है, उसका स्वभाव अच्छा है, उसमें ये विशेषता है, उसमें वो विशेषता है। **ये मत भूलना ट्रेन में बैठे हैं, कभी भी उतर सकता है वो, फिर रोते बैठना पड़ेगा क्योंकि ट्रेन तो निरंतर चालू ही है, नये यात्री आ रहे। आज की ही मुरली में कहा बाबा**

ने, यात्रा पर हो तुम, तुम रुहानी यात्री हो, बाप तुम्हारा साथी है और ब्राह्मण परिवार भी तुम्हारा साथी है। यात्रा तुम्हारी चालू है, संगठन में यात्रा करते हैं तो मजा आता है, खुशी होती है।

पार्टियों से मुलाकात, लगाव संकल्प में, कर्म में, बोल में, परिणाम दो, यदि किसी से भी लगाव है या घृणा है, ईर्ष्या है, कुछ भी है, इसके दो परिणाम है, कौन से? एक फ्लक्चुएशन (Fluctuation)**,** दूसरा डिससेटीस्फ़ेक्शन (Dissatisfaction)। पहला है फ्लक्चुएशन, कभी योगी, कभी सहजयोगी, कभी मुश्किल योगी, कभी याद, कभी फरियाद, कभी मस्त, कभी दिलशिकस्त। फ़्लक्चुएटिंग माइन्ड (Fluctuating Mind) है, हलचल है मन में, हलचल है इसका अर्थ ही किसी से लगाव है। व्यक्ति से नहीं है तो जरूर वैभव से है, वैभव से नहीं है तो जरूर किसी स्थान से है, किसी न किसी में तो है या किसी अतीत की स्मृतियों से। यह मनुष्य का स्वभाव है, अतीत में जीता है या तो भविष्य में, वर्तमान में कम जीता है। **वर्तमान में जीना ही जीवन है** वास्तव में परन्तु वर्तमान का ये जो मार्ग है बड़ा ही सरकरा है, नेरो इज द पाथ (Narrow Is The Path), जीजस कहता है, बहुत ही सरकरा है मन, बड़े-बड़े रास्तों पर चला जाता है क्योंकि अतीत के रास्ते बड़े-बड़े हैं, भविष्य के भी बड़े-बड़े हैं, पर जो वर्तमान का है वो बहुत ही छोटा है। इतनू सी पगदंडी है, मन कहता है, यहां नहीं चलना है, मुझे पीछे जाना है। कभी पीछे चले जाता है, कभी आगे चले जाता है, नेरो इज द पाथ। तो पहला, यदि मन डामाडोल हो रहा है, यदि मन डोलते ही रहता है, कभी सहज लगता है, कभी मुश्किल लगता है, कभी अमृतवेला उठते हैं, कभी नहीं उठते हैं, कभी 3 बजे, कभी 2 बजे उठते हैं, कभी 3.30 बजे उठते, कभी 4, तो कभी फिर बात ही मत पूछो। चुपचाप किसी को बिना बताये, कोई देखे ना बाबा ने कमरे में, क्योंकि रोज देखने वाले सोचेंगे आज कहां है ये? क्यूं इतना फ़्लक्चुएटिंग माइन्ड है? जरूर कहीं लगाव है। दूसरा बताया, डिससेटीस्फ़ेक्शन (dissatisfaction) । दूसरे कहेंगे, तुम कितने भाग्यशाली हो, तुम कितने सुखी हो? वो कहेंगे, मेरे जैसा दुःखी कोई नहीं। दूसरे कहेंगे, तुम बहुत अच्छे हो। वो कहेंगे, कहां अच्छा! उसे अप्राप्ति ही अप्राप्ति, असंतुष्टता ही असंतुष्टता दिखेगी जीवन में और **अपनी असंतुष्टता के लिए किसको दोषी ठहरायेगा? किसी और को, इसकी वजह से, इसको हटा दो तो सब सुख-शांति जीवन में आ जायेगी।** डिपार्टमेंट चेंज हो जाये बस, फिर तो पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ है, बस जीवन में ये टाइमिंग चेंज कर दो, बस फिर तो ऐसा पुरुषार्थ करूंगा, कल सुबह तक बाप समान। बस, बाबा ये जो बाजू में योग में बैठा है न इसको कहीं से बुलावा आ जाये बस, कोई बड़ी सेवा में विदेश ही भेज दो इसको चलेगा, पर भेजो,

कुछ तो करो, बाबा से कहते हैं ना, बच्चे बाप से कहते है। हिसाब बनाओ तुम और चुक्तू करे बाप! दूसरों को दोषी ठहराते हैं। वो कौन सा शक्तिशाली वाक्य है यहां पर, भाग्यविधाता के बारे में? बहुत ही पावरफुल वाक्य है यहां पर एक, कौन सा? ऐसा वाक्य है कि जो जीवन भर याद रखना है, यहां पर, भाग्यविधाता के विषय में, बच्चे दूसरों को दोषी ठहराते हैं कि इसकी वजह से ऐसा हो रहा है। कौन सा वाक्य है? कौन बतायेगा? जल्दी, याद करो मुरली। एक होता है पिक्चर थिंकिंग (Picture Thinking), पिक्चर थिंकिंग पता है क्या होता है? **पढ़ते-पढ़ते शब्दों को नहीं देखना, शब्दों को देखते-देखते ही चित्रों में परिवर्तित कर देना**, इसको कहते पिक्चर थिंकिंग।

विदेश में एक बहुत ही पावरफुल साइंटिस्ट हुआ था कभी, निकोला टेस्ला, हमें तो लगता है वो इस समय इसी ब्राह्मण परिवार में कहीं है क्योंकि उसकी सारी विचारधारा ज्ञान से मिलती है। जिसने इलेक्ट्रिक करेंट की खोज की, अल्टरनेट करेंट, निकोला टेस्ला, इतना शक्तिशाली और इतनी फोटोग्राफिक मेमरी थी जिसकी, 6-6, 8-8 भाषाएं जानता था, अनुभव, उसको विजन्स (visions) दिखते थे बचपन में। अगर उसे कुछ इन्वेन्शन करना है, वो इन्वेनशन करते-करते ही, वो इन्वेन्शन उसको पहले ही मन की आंखों में सबकुछ दिखाई देने लगता था, इतना डिटेल में। हर एक चीज, कोई किताब पढ़ता था तो ऐसे पढ़ता था कि वो चित्र बन जाते थे मन की आंखों में। निकोला टेस्ला दो घंटा सोता था, बस, उतनी ही उसकी नींद थी, उसके आगे उसको नींद नहीं आती थी और फ्रेश रहता था दिन भर क्योंकि उसका कहना था कि हम ये शरीर है ही नहीं, हम ऊर्जा हैं और ऊर्जा को केवल चार्जिंग की आवश्यकता है बस और मेरा चार्जिंग मेरा कर्म है। द ग्रेटेस्ट साइंटिस्ट एवर इन दिस वर्ल्ड (The Greatest Scientist Ever In This World), स्वामी विवेकानंद की मुलाकात हुई थी उनसे 1896 में। विवेकानंद ने लिखा है कि मुझे नहीं लगता मेरे जीवन में इससे अधिक कोई बुद्धिवान व्यक्ति को मैं कभी मिला हूं (निकोला टेस्ला के लिए)। अगर ये व्यक्ति आध्यात्म में आ जाये तो वेदांत का विस्तार सारे विश्व में हो जायेगा, अगर ये निकोला टेस्ला आध्यात्मिक क्षेत्र में आ जाये तो, ऐसा स्वामी विवेकानंद ने लिखा है, उस प्रतिभा का वो व्यक्ति।

मुरली को सुनते-सुनते चित्र बनाते जाना है मन में ताकि याद रह जाये, मुरली को पढ़ते-पढ़ते ही वो शब्द देखना है, वो शब्द उड़ रहे हैं और उनको पंख लग गये हैं, याद हो जाये। क्या वाक्य था वो, जल्दी

बताओ? **जब भाग्य विधाता भाग्य बना रहा है, परमात्म शक्ति के आगे आत्मा की शक्ति भाग्य को हिला नहीं सकती।** अब सब बोलेंगे हमारे पीछे, जब भाग्य विधाता भाग्य बना रहा है, परमात्म शक्ति के आगे आत्मा की शक्ति, भाग्य को हिला नहीं सकती। इस वाक्य को याद करना है और अमृतवेले इसे दोहराना है, जब भाग्य विधाता मेरा भाग्य बना रहा है तो संसार की कोई भी आत्मा मेरे भाग्य को कैसे हिला सकती है! मुझे अवश्य मिलेगा जो मेरे भाग्य में है। हो ही नहीं सकता कि ये मेरे भाग्य में बाधा बन रहा है, मुझे अपोर्चुनिटी (Opportunities) नहीं मिल रही हैं सेवा की, मैं तो सेवा बहुत करना चाहती हूं, चाहता हूं, पर ये लोग बाधा बने हुए हैं। अरे! भाग्य विधाता तुम्हारा भाग्य बना रहा है, क्या परमात्म शक्ति के आगे कोई आत्मा की शक्ति ज्यादा है? हो ही नहीं सकता। कितना शक्तिशाली वाक्य है पूरी मुरली का! तो लगाव, झुकाव, आकर्षण व्यक्तियों के प्रति हटा दो और दूसरा है वैभव। राम, सीता और हिरण, हलचल में न लाये कोई साधन। अगर कोई भी साधन, कोई भी वैभव, कोई भी वस्तु इस संसार की, मन को वश में कर रही है, हलचल में ला रही है अर्थात् हमारा आकर्षण हो गया है उस वैभव के तरफ। फिर ये दो चीजें होंगी, फ्लक्चुएशन और डिससेटीस्फ़ेक्शन होगा ही होगा, इसलिए इस संसार का कोई भी साधन इतना शक्तिशाली न हो कि वो हमें अपना गुलाम बना दे। प्रकृति के हम मालिक हैं, प्रकृति हमारी दासी है, साधनों में इतनी शक्ति कहां, इसलिए इसका भी अभ्यास करना है। **तो वैभव, व्यक्ति, शरीर, विशेषता कोई भी खींचें न, ये लीकेज हैं, स्टॉप द लीकेज।**

और एक चीज, यदि भाई और बहन के बीच, यदि पाण्डव और शक्ति के बीच बाप है तो कोई झगड़ा नहीं, ये भी कहा न आज। पाण्डव शक्तियों को आगे रखें, शक्ति पाण्डवों को आगे रखें, दोनों के बीच क्या है? बाप। यदि बाप हट जाये तो दो चीजे होंगी। या तो आकर्षण या तो झगड़ा, या तो लगाव या तो काम वासना भड़केगी या तो घृणा, नफरत। ये दो ही हैं पर यदि बाप बीच में है तो ये नहीं होगा। और लास्ट प्वाइंट, तुम कौन हो? हीरो डबल हीरो।

ऐसे डबल हीरो आत्माओं को, ऐसे भाग्यवान आत्माओं को, ऐसे सम्पूर्ण पवित्र आत्माओं को, ऐसे रूहानी स्नेह में लवलीन आत्माओं को, ऐसे लगाव मुक्त आत्माओं को, लीकेज मुक्त आत्माओं को, ऐसे क्रेक मुक्त आत्माओं को, होल मुक्त आत्माओं को, सीपेज (seepage) मुक्त आत्माओं को, ऐसे सच्ची सीताओं को, ऐसे सच्ची सीता बनकर रहना, एक उंगली भी संकल्प अंगूठा भी उधर न जाये लकीर के

बाहर, ऐसे रूहानी यात्रियों को, ऐसे बीच में बाप को रखने वाली आत्माओं को, स्त्री और पुरूष बीच में अगर भगवान चला जाता है तो प्रोब्लम चालू। **स्त्री के आध्यात्म में पुरूष का देह सबसे बड़ी बाधा है और पुरूष की आध्यात्मिक प्रगति में स्त्री का देह सबसे बड़ी बाधा है, इसलिए किसी को स्त्री देखो ही नहीं, न ही पुरूष देखो, चेतनायें देखो, शक्तियां देखो और पाण्डव देखो, बस, ऊर्जा के कण देखो, ये कौन है?** ऊर्जा का क्षेत्र है, जिसमें ये सभी ऊर्जा के कण हैं, ये शरीर भी मेरा शरीर नहीं हैं, ऊर्जा है, तरंगे ही तरंगे, इसी का अनुभव करना है, अशरीरी। **बाप से प्यार अर्थात् अशरीरी हो जाओ, ये बाप से प्यार का प्रमाण है, यदि बाप से प्यार है तो एक ही प्रमाण है अशरीरी हो जाओ,** ऐसे अशरीरी आत्माओं को, ऐसे प्रभु प्रेमी आत्माओं को, ऐसे परमात्म प्रेमी आत्माओं को, ऐसे रूहानी स्नेही, निःस्वार्थ स्नेही, ढ़ेर सारी स्वमान वाली आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार, गुड नाईट और नमस्ते।

हम रूहानी बच्चों की रूहानी बापदादा को याद-प्यार, गुडनाईट और नमस्ते।

ओम शान्ति